यदि वह कृष्णभावनाभावित है, तो अवश्य ही वैकुण्ठ-जगत् के कृष्णलोक में श्रीकृष्ण का सांनिध्य-लाभ करेगा। यह कहना बिल्कुल मिथ्या है कि इस देह का नाश होने पर सब कुछ समाप्त हो जाता है। सत्य यह कि जीवात्मा निरन्तर देहान्तर कर रहा है और उसकी वर्तमान देह और क्रिया अगले शरीर को निर्धारित करती हैं। यथासमय उस देह को त्याग कर कर्मानुसार किसी अन्य देह में जाने को जीव बाध्य है। यहाँ उल्लेख है कि सूक्ष्म शरीर अगले शरीर का संस्कार धारण किए रहता है और पुनर्जन्म में एक नए स्थूल शरीर का विकास करता है। इस देहान्तर के क्रम का और देह में चलने वाले संघर्ष का नाम ही **कर्षति** है।

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते।।९।।

श्रोत्रम्=कान; **चक्षुः**=नेत्र; **स्पर्शनम्**=त्वचा; **च**=तथा; **रसनम्**=जिह्वा; **घ्राणम्**=नासिका का; **एव**=ही; **च**=तथा; **अधिष्ठाय**=आश्रय लेकर; **मनः**=मन (का); **च**=भी; **अयम्**=यह (जीव); **विषयान्**=विषयों को; **उपसेवते**=भोगता है।

अनुवाद

इस प्रकार दूसरा स्थूल शरीर ग्रहण करके यह जीव शरीर के अनुसार मन तथा उसके आधीन कान, नेत्र, त्वचा, रसना और नाक से विषय भोगता है।।९।।

तात्पर्य

भाव यह है कि जो जीव अपनी चेतना को कुत्ते-बिल्ली के गुणों से दूषित कर देता है, उसे पुनर्जन्म में कुत्ते-बिल्ली का शरीर मिलता है और इसी के अनुरूप वह विषय भोगता है। चेतना मूल रूप में जल के समान निर्मल और शुद्ध है। परन्तु यदि जल में कोई रंग मिला दिया जाय तो वह उसी रंग का प्रतीत होने लगता है। ऐसे ही, चेतना भी आदिरूप में निर्मल है, क्योंकि जीवात्मा का स्वरूप शुद्ध है। परन्तु प्राकृत गुणों के संग के अनुसार वह विकृत हो जाती है। असली चेतना कृष्णभावना है; अतएव जो कृष्णभावनाभावित है, वह अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित है। यदि यह चेतना किसी प्रकार के प्राकृत मनोभाव से दूषित हो जाय, तो अगले जन्म में उसी के अनुसार देह मिलेगी। यह आवश्यक नहीं कि मनुष्य शरीर की ही फिर प्राप्ति हो; कुत्ते, बिल्ली, सुअर, देवता आदि चौरासी लाख योनियों में से किसी की भी प्राप्ति हो सकती है।

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।।१०।।

उत्क्रामन्तम्=शरीर त्यागते हुए; **स्थितम्**=शरीर में स्थित; **वा अपि**=अथवा; **भुञ्जानम्**=विषय भोगते हुए; **वा**=या; **गुणान्वितम्**=त्रिगुणमयी माया के आधीन **विमूढाः**=मूर्ख; **न अनुपश्यन्ति**=नहीं देख सकते; **पश्यन्ति**=देखते हैं; **ज्ञानचक्षुषः**=विवेकज्ञानरूप नेत्रों वाले।